समाचार

ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन कार्यशाला का शुभारंभ किया महापौर ने

(दो दिवसीय कार्यशाला के आज प्रथम दिन अपशिष्ठ प्रबंधन पर अपना नया माडल प्रस्तुत किया श्री सी.श्रीनिवासन ने)

कोरबा 15 मार्च 2016 –नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा आयोजित ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन विषयक दो दिवसीय कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन आज महापौर श्रीमती रेणु अग्रवाल के द्वारा किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिन आज बेल्लूर से आए विषय विशेषज्ञ श्री सी.श्रीनिवासन ने ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन पर अपना नवीन माडल प्रस्तुत किया तथा बताया कि अपशिष्ठ कचरा नहीं बल्कि संसाधन है, रा–मटेरियल है, बस इसका निष्पादन सही तरीके से होना चाहिए।

पुराने बस स्टैण्ड कोरबा स्थित गीतांजलि भवन सभागार में आज ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला के आयोजन का शुभारंभ किया गया। महापौर श्रीमती रेणु अग्रवाल ने मां सरस्वती के तैल चित्र पर पुष्पमाला अर्पित कर एवं दीप प्रज्वलन कर कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन किया। इस मौके पर निगम के सभापति श्री धुरपाल सिंह कंवर, निगम आयुक्त श्री अजय कुमार अग्रवाल तथा नेता प्रतिपक्ष योगेश जैन के साथ ही निगम के मेयर इन कांउसिल के सदस्य, पार्षदगण, एल्डरमेनगण तथा आमंत्रितगण विशेष रूप से उपस्थित थे। इस मौके पर महापौर श्रीमती रेणु अग्रवाल ने कहा कि निगम द्वारा आयोजित की गई ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन विषयक यह कार्यशाला अत्यंत महत्वपूर्ण है, इस कार्यशाला के माध्यम से नगर की साफ–सफाई व्यवस्था को एक नई दिशा मिलने का मार्ग प्रशस्त होगा तथा कचरे की एक बड़ी समस्या का सहजता के साथ हल निकालने का रास्ता मिलेगा। उन्होने उपस्थित लोगों से आग्रह किया कि वे कार्यशाला में प्रस्तुत किए जा रहे तथ्यों एवं उपायों को पूरी गंभीरता के साथ सुने तथा उन पर अमल करने की दिशा में अपनी–अपनी भूमिका सुनिश्चित करें।

अपशिष्ठ कचरा नहीं बल्कि संसाधन है–बेल्लूर से आए विषय विशेषज्ञ श्री सी.श्रीनिवासन ने ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन पर अपना बेहतरीन माडल प्रस्तुत किया। उन्होने बताया कि हम जिस अपशिष्ठ के लिए कचरा, कूड़ा, गंदगी आदि शब्दों का उपयोग करते हैं, वह वास्तव में कचरा नहीं बल्कि संसाधन है, हम खुद अपशिष्ठ निकालते हैं, गंदगी करते है और फिर उस गंदगी से छुटकारे के लिए, उसके प्रबंधन के लिए चिंता करते हैं। उन्होने कहा कि उनके माडल का प्रमुख तथ्य है कि हमारे पूर्वज अपशिष्ठ का जिस तरह से प्रबंधन करते थे, हमे उसी दिशा में आगे बढ़ना है। निश्चित रूप से घरों से, व्यवसायिक व औद्योगिक प्रतिष्ठानों से, होटल, विवाह घर या दुकानों से निकले हुए अपशिष्ठ का प्रबंधन सीखने के लिए हमें कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि उसका समुचित प्रबंधन हम स्वयं ही अपनी सामूहिक सहभागिता के द्वारा बड़ी सुगमता के साथ कर सकते हैं। अपशिष्ठ प्रबंधन के विगत वर्षो के इतिहास के बारे में जानकारी देते हुए उन्होने बताया कि वर्ष 1997 में गारवेज कम्पोस्टिंग प्रोजेक्ट, 1999 में सालिड वेस्ट मैनेजमेंट, 2001 में लिक्विड एण्ड सालिड वेस्ट मैनेजमेंट, 2003 में वेस्ट टू वेल्थ प्रोग्राम, 2005 में जीरो वेस्ट मैनेजमेंट, 2007 में गारवेज टू गोल्ड और अब वर्तमान में सालिड एण्ड लिक्विड रिसोर्स मैनेजमेंट के रूप में अपशिष्ठ प्रबंधन पर कार्य किया जा रहा है।

श्रीनिवासन का कोरबा के लिए एस.एल.आर.एम. माडल– श्री सी.श्रीनिवासन ने बताया कि घरों से निकले हुए अपशिष्ठ के समुचित प्रबंधन के लिए उन्होने अपना नया माडल विकसित किया है तथा इस माडल पर छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर नगरीय निकाय में बेहतरीन कार्य किया जा रहा है। कोरबा नगरीय निकाय के लिए उन्होने अपना माडल प्रस्तुत करते हुए कहा कि इसके लिए निगम के प्रत्येक वार्ड में एस.एल.आर.एम. सेंटर बनाने होंगे तथा लगभग 400 ट्रायसिकल की जरूरत होगी, 250 परिवारों के बीच एक ट्रायसिकल का उपयोग किया जाएगा तथा प्रत्येक परिवार को एक लाल डस्टबिन तथा एक हरा डस्टबिन उपलब्ध कराया जाएगा। महिला स्वसहायता समूहों या अन्य संगठन इन एस.एल.आर.एम.सेंटरों पर कार्य करेंगे तथा लगभग 2032 लोगों को रोजगार प्राप्त होगा, उन्होने कहा कि वास्तव में अपशिष्ठ प्रबंधन के लिए ट्रैक ट्रेक्टर, बड़े डस्टबिन, जे. सी.बी. मशीन व काफी संख्या में सफाई कामगारों की जरूरत बिलकुल नहीं है, यदि इस माडल पर काम किया जाता है तो अक्टूबर 2017 तक नगर निगम कोरबा को 85 लाख 50 हजार रूपये मासिक आय होगी तथा लगभग 10 करोड़ रूपये का वार्षिक टर्न ओव्हर होगा।

कार्बनिक व अकार्बनिक अपशिष्ठ का पृथक संग्रहण– श्री सी.श्रीनिवासन ने माडल प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रत्येक परिवार को लाल एवं हरे रंग के डस्टबिन उपलब्ध कराए जाएंगे। हरे डस्टबिन में कार्बनिक या नेचुरल व खाद्य सामग्री के अपशिष्ठ तथा लाल डस्टबिन में फैक्ट्री निर्मित व अकार्बनिक सामग्री के अपशिष्ठ संग्रहित होंगे। डोर टू डोर अपशिष्ठ संग्रहण के लिए पहुंचने वाला ट्रायसिकल रिक्शा पृथक–पृथक दोनों प्रकार

कमशः–2

के अपशिष्ठों को संग्रहित करेंगे तथा उन्हें एस.एल.आर.एम. सेंटरों में लाएगा, जहां पर पुनः उनका पृथकीकरण होगी तथा माडल के अनुसार इनका निष्पादन का कार्य किया जाएगा। उन्होने बताया कि घरों में नानवेज आइटम अपशिष्ठ पेपर पैकेट में लपेटकर हरे स्केच पेन से मार्किंग करके हरी बल्टी में डाला जाएगा तथा नेपकिन, डाईपर्स आदि जैसे अपशिष्ठ को पैकेट में लपेटकर रेड कलर से स्केच कर लाल डस्टबिन में संग्रहित किया जाएगा। उन्होने कहा कि वास्तव में प्राथमिक स्टेज पर ही हम अपशिष्ठ की छटाई कर लें तथा उपयोग अनुसार उनका समापन सुनिश्चित करें, तो गारवेज की कोई समस्या ही नहीं रहेगी।

कचरा संग्रहण का कराया प्रेक्टिकल रिहर्सल– कार्यशाला के दौरान श्री सी.श्रीनिवासन ने मंच पर 30 लोगों को आमंत्रित किया, उन्हें टोकन दिये तथा टोकन के अनुसार विभिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री, फल, फुल, पैकेट बंद खाद्य पदार्थ आदि देकर मंच पर ही उनका उपयोग करने एवं इस दौरान निकले हुए अपशिष्ठ को हरे व लाल डस्टबिन में संग्रहित करने का व्यवहारिक रिहर्सल कराया तथा बताया कि इन दोनों डस्टबिन में जो अपशिष्ठ संग्रहित हुए है, उनकी पृथक–पृथक कीमत बाजार में क्या है तथा इन सामग्रियों का पृथक–पृथक संग्रहण करके इस अपशिष्ठ से हम कितनी राशि प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही उन्होने बताया कि सब्जी आदि काटने पर जो अपशिष्ठ निकलता है वह वास्तव में कचरा नहीं है बल्कि वह हमारे लिए अनुपयोगी सामग्री है, किन्तु पशुओं के लिए वह एक खाद्य पदार्थ है, बशर्ते उनका समय पर संग्रहण कर उन्हें पशु आहार के रूप में उन तक पहुंचाया जा सके। कार्यशाला में उन्होने गोबर गैस, बर्मी कम्पोस्ट खाद, पेड़ के सुखे पत्ते, टहानियों, हरी व सुखी घांस आदि से खाद तैयार करने की विधि का भी प्रस्तुतीकरण किया।

स्वसहायता समूहों, संगठनों की प्रमुख भूमिका– उन्होने बताया कि इस माडल के तहत महिला स्वसहायता समूहों व अन्य इच्छुक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। निगम द्वारा एस.एल.आर.एम. सेंटर की स्थापना, सेंटर में टूल्स, औजार, ट्रायसिकल आदि की व्यवस्था तथा काम करने वाले लोगों के प्रशिक्षण की व्यवस्था का कार्य करना होगा, इसके पश्चात कार्य प्रकिया की आगामी जिम्मेदारी स्वसहायता समूह के सदस्यों व संगठनों की होगी। उन्होने बताया कि बी.पी.एल.परिवार के सदस्य इनके साथ जुड़कर कार्य करते हैं तो उन्हें प्रतिमाह कम से कम 5000 रूपये से अधिक की आय होगी तथा जैसे–जैसे यह कार्य बढ़ता जाएगा, आय में वृद्धि होती जाएगी, चूंकि अंबिकापुर नगरीय निकाय में इस माडल पर सफलतापूर्वक कार्य किया जा रहा है, अतः यह माडल केवल कागजी आधार पर नहीं बल्कि व्यवहारिक आधार पर पूर्ण रूप से सफल है।

16 मार्च को कार्यशाला का दूसरा दिन–ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन विषय पर आयोजित की जा रही इस दो दिवसीय कार्यशाला के अंतर्गत दूसरे दिन 16 मार्च को प्रातः 10 बजे से शाम 6 बजे तक कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा, जिसमें विकेन्द्रीकृत रिसोर्स कलेक्शन की विधि का महत्व, नान–वेजटेरियन रिसोर्स मैनेजमेंट तथा विकेन्द्रीकृत रिसोर्स कलेक्शन की विधि का महत्व सुखी घांस तथा अन्य गार्डन व कृषि सामग्री मैनेजमेंट, आवासीय क्षेत्र परिसर मैंटेनेस, लिक्विड रिसोर्स मैनेजमेंट, सेप्टिक टैंक वेस्ट मैनेजमेंट, डिस्पोजल मैथड आफ कम्पोस्ट, वेजिटेबल रूफ गार्डन, किचन गार्डन, आर्गेनिक फार्मिंग एवं रिसाईक्लिंग इंडस्ट्रीज विषय पर प्रकाश डाला जाएगा।

संपादकव्यूरोचीफ.....
कृपया प्रकाशनार्थ सादर संप्रेषित

(रावेन्द्र सिंह)
सहायक जनसंपर्क अधिकारी
नगर पालिक निगम
कोरबा (छ.ग.)